Pol. Sc., Paper 1st

Question:- महात्मा गाँधी के राजनीतिक विचारों का विवेचन करें।
(Discuss the Political ideas of Mahatma Gandhi.)

सत्य एवं अहिंसा

महात्मा गाँधी व्यक्ति, समाज और राज्य को नैतिक बनाना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने कतिपय सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। उनमें सर्वप्रमुख है सत्य और अहिंसा। सत्य एवं अहिंसा एक-दूसरे के अनुपूरक और पूरक हैं। इन दोनों का एक अविभाज्य जोड़ा है। गाँधी जी ने सत्य-अहिंसा का एक व्यापक स्तर पर प्रयोग किया।

सत्य का अर्थ है सबके प्रति प्रेम और सेवा द्वारा आध्यात्मिक एकता को प्राप्त करना, सबकी सेवा करना और सबसे प्रेम करना। सत्य का प्रत्येक स्थिति में पालन करना चाहिए उसे कितना भी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। सत्य की प्राप्ति अहिंसा द्वारा संभव है। अहिंसा का अर्थ केवल नहीं मारना नहीं है बल्कि इसका अर्थ है मन, वचन तथा कर्म के द्वारा किसी भी जीवधारी को आघात न पहुँचाना। गाँधी जी स्वीकार करते हैं कि भौतिक जीवन में कुछ न कुछ हिंसा अवश्य रहती है। लेकिन अहिंसा हिंसा से सदा श्रेष्ठ है। सत्य और अहिंसा नैतिक अस्त्र के प्रयोग करने वाला व्यक्ति वीर, निर्भीक, आत्मसम्मानित और नैतिक होता है।

गाँधीजी के अनुसार साध्य और साधन अभिन्न हैं। साधन एक बीज की तरह है और साध्य एक पेड़ है। साध्य एवं साधन में वही संबंध है जो बीज और पेड़ में है। इसलिए गाँधी जी ने कहा था कि साध्य का नैतिक होना पर्याप्त नहीं है साधन को भी नैतिक होना चाहिए, साधनों की अनैतिकता निश्चित रूप से साध्य की नैतिकता को नष्ट कर देती है। यदि एक व्यक्ति गलत मार्ग पर चलता है तो वह निश्चित रूप से अपने अभीष्ट लक्ष्य से कहीं अन्यत्र पहुँचेगा।

Scanned with CamScanner

गाँधी जी ने राजनीति में नैतिकता पर विशेष बल दिया है। यहाँ तक की स्वराज की प्राप्ति के लिए वे हिंसा और असत्य का प्रयोग के लिए तैयार नहीं थे। इस संदर्भ में फासीवादी और साम्यवादी विचारों से गाँधी जी का मौलिक मतभेद पाया जाता है।

सत्याग्रह

गाँधी जी का सत्याग्रहरूपी हथियार राजनीति के युद्धक्षेत्र में अनोखी खोज है। सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है "सत्य पर डटे रहना"। गाँधी जी ने इसकी परिभाषा देते हुए कहा है कि "सत्याग्रह सत्य पर आरूढ़ रहकर अपना सत्य को साक्षी करके प्रेम के द्वारा ही हिंसात्मक साधनों से सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया। वह घृणा को प्रेम से असत्य को सत्य और हिंसा को आत्मकष्ट द्वारा विरोधी को गलत मार्ग से हटाएगा। गाँधी जी ने केवल सत्याग्रह के सिद्धान्त की चर्चा नहीं की बल्कि बड़े पैमाने पर इसका प्रयोग कर उसकी व्यवहारिक उपयोगिता को भी प्रमाणित कर दिया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में इसका सफल प्रयोग किया। पुनः भारत की स्वतंत्रता दिलाने में उनके अहिंसात्मक सत्याग्रह को अद्वितीय सफलता मिली। सत्याग्रह का प्रयोग वे सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र में नहीं बल्कि दैनिक और गृहजीवन में भी पाते हैं। महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला है। जो नि० लिए है।

(i) असहयोग (Non-co-operation) -

असहयोग के कई तरीके हैं जैसे हड़ताल, सामाजिक बहिष्कार और धरना। हड़ताल (Strike) के अन्तर्गत विरोध के रूप में सत्याग्रही काम को बंद कर देते हैं। हड़ताल हिंसात्मक नहीं होना चाहिए। सामाजिक बहिष्कार (Social boycott) समाज के वैसे व्यक्ति जो जनमत की अवहेलना करते हैं और सहयोग नहीं करते हैं, बहिष्कार है। लेकिन इसके अन्तर्गत हिंसात्मक और गलत दबाव को काम में नहीं लाना चाहिए। धरना (Picketing) का अर्थ गाँधी जी

के विचार में जननिंदा द्वारा समाज के कलंकित को लज्जित करना और सचेत करना है। कलंकितों को हिंसात्मक उपायों को नहीं अपनाना चाहिए धरना में हिंसात्मक उपायों को नहीं अपनाना चाहिए बल्कि इसे समझाने बुझाने वाला होना चाहिए। इसे दबाव, धमकी, पुतला के जलाने, मूख हड़ताल और घेराव से रहित होना चाहिए।

(ii) सविनय अवज्ञा (Civil disobedience)

सविनय अवज्ञा सबसे अधिक प्रभावशाली और सशस्त्र क्रांति का रक्तहीन रूप है। यह प्रतिरोधी के विद्रोह को अहिंसात्मक ढंग से प्रकट करता है। इसके अन्तर्गत अधिकारी की आज्ञा की अवहेलना की जाती है, लेकिन शांतिपूर्ण तरीका से, इसके पीछे घृणा और शत्रुता की भावना नहीं होनी चाहिए। इसलिए, गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में कुछ चुने हुए व्यक्तियों को ही भाग लेने की अनुमति दी, जो नैतिक नियमों का पालन कर सके।

(iii) हिजरत (Hijrat)

गाँधीजी ने बारदोली, जूनागढ़ और विट्ठलगढ़ के सत्याग्रहियों को हिजरत के प्रयोग की सम्मति दी थी। इसके अन्तर्गत स्थायी-निवास स्थान से सत्याग्रही या अन्य व्यक्ति दूसरे स्थान पर चले जाते हैं, क्योंकि पूर्व स्थान पर वे आत्म-सम्मान से नहीं रह सकते या अपनी रक्षा के लिए उन्हें हिंसात्मक तरीकों को काम में लाना पड़ता है।

(iv) उपवास (Fasting)

उपवास को गाँधीजी ने अग्निबाण कहा था। उन्होंने इसे विज्ञान का रूप दिया था। उपवास वह व्रत है जो प्रायश्चित एवं आत्मशुद्धि के लिए किया जाता है। उपवास करने वाले मनुष्य में आध्यात्मिक बल रहता है जो बड़ी आत्माओं में खलबली मचा देता है। उपवास अन्यायियों के हृदय को स्पर्श करता है और उसमें परिवर्तन लाता है, जिसके चलते वे न्यायपूर्ण ढंग से सोचने पर बाध्य हो जाते हैं।

(iv) हड़ताल (Strike)

हड़ताल श्रमिकों के द्वारा प्रयोग किए जाने वाला एक महत्वपूर्ण अस्त्र है। यद्यपि भारत में हड़ताल आम बात हो गयी है, लेकिन साधारण हड़ताल और गाँधी जी के हड़ताल में मौलिक अंतर है। महात्मा गाँधी श्रमिकों के साधारण हड़ताल को पूँजीवाद एवं पूँजीपति समुदाय को नष्ट करने का साधन नहीं मानते थे बल्कि उनका कहना था कि मजदूरों को उद्योगों को अपना समझना चाहिए। हड़ताल मालिकों की अकुशलता और अन्याय के विरुद्ध होना चाहिए न कि उद्योगों को हस्तगत करने और नियंत्रण करने के लिए। सत्याग्रहियों की हड़ताल अहिंसात्मक होनी चाहिए। उन्हें न्यायपूर्ण और स्पष्ट माँगें करनी चाहिए। उनका यह भी मानना था कि हड़ताल के दिनों में अपने परिवार को भरण-पोषण करने के लिए हर हड़ताली को कुछ हस्तकला सीखनी चाहिए।

महात्मा गाँधी के अनुसार सत्याग्रह देश के अन्दर अन्यायियों और बुरे व्यक्तियों के विरुद्ध ही केवल प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है, बल्कि विदेशी आक्रमण को रोकने के लिए यह हथियार सफल सिद्ध हो सकता है। उन्होंने विदेशी आक्रमण के विरुद्ध दो मार्गों को अपनाने की सम्मति दी थी। पहले तरीके के अनुसार आक्रमणकारी को देश में आने की आज्ञा दी जाए, लेकिन उनके साथ असहयोग किया जाय। दूसरे तरीके के अनुसार निःशस्त्र सत्याग्रहियों को बिना कारण मौत के घाट उतारते देख कर आक्रमणकारी का हृदय स्वतः ही पिघल जायेगा। दोनों तरीकों का लक्ष्य है विरोधी तथा आक्रमणकारी के हृदय को जीतना। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के विरुद्ध चीनवासियों को उन्होंने यही परामर्श दिया था। इस प्रकार सत्याग्रह का प्रयोग उन्होंने आंतरिक और विदेशी दोनों दृष्टिकोणों से करने की सलाह दी।

Scanned with CamScanner